Creative Thinking.

सृजनात्मकता किसी सामान ,विचार ,कला,साहित्य से संबद्ध नया रचने ,आविष्कृत करने या पुन सृजित करने की प्रक्रिया है।यह एक मानसिक क्रिया है जो भौतिक परिवर्तनों को जन्म देती है।इस तरह यह नयें और कल्पनाशील विचारों को वास्तविकता में बदलने का प्रक्रम है।

- आज हम और आप विज्ञान का चमत्कार जो देख रहे हैं वह सृजनात्मकता ही तो है। पेड़ से पके फल को टूट कर जमीन पर गिरते तो बहुत लोग ने देखा परन्तु न्यूटन ने इस घटना से गुरूत्व gravity.का नियम निकाला हांड़ी के उबलते पानी और वाष्प को देख कर James Watt ने रेल के इंजन का अविष्कार किया।यही सर्जनात्मक चिन्तन के परिणाम है।

सर्जनात्मक चिन्तन की अवस्थाएँ (Stages) :

रचनात्मक चिन्तन में विचारों का आगमन अथवा समस्या-समाधान प्रायः बड़े सहज ढंग से अचानक होता है। कभी ऐसा भी होता है कि समस्या आते ही कोई नये ढंग का समाधान सूझ गया। अधिकांश समस्या और उसके सर्जनात्मक समाधान के बीच कुछ समय बीतता है। **वैलस** (Wallas, 1926) के अनुसार, रचनात्मक चिन्तन की सम्पूर्ण क्रिया चार मुख्य अवस्थाओं में बाँटी जा सकती है। ये अवस्थाएँ हैं—तैयारी अथवा आयोजन (preparation), उद्भवन (incubation), प्रबोधन (illumination) और सत्यापन (verification)। यह आवश्यक नहीं है कि सभी समस्याओं में ये चारों अवस्थाएँ समानरूप से वर्तमान रहें, परन्तु कम या अधिक समय के लिए ये अवस्थाएँ आती अवश्य हैं।

आयोजन (preparation)—चिन्तन एक प्रकार से साक्ष्यों (evidences) का फैलाव है ताकि वातावरण की अधिकाधिक घटनाएँ एक सुगठित व्यवस्था में आ सकें। इसके लिए साक्ष्यों एवं तथ्यों का संग्रह आवश्यक होता है। यह कार्य रचनात्मक चिन्तन की पहली अवस्था अथवा आयोजन की अवस्था में होता है। कभी-कभी तो यह अवस्था बहुत थोड़े समय की होती है और कभी यह अवस्था वर्षों चलती है। कर्कट-रोग का पता लगानेवाले शोधकर्त्ताओं का जीवन इस समस्या के साक्ष्य-संग्रह में बीत रहा है। तैयारी की इसी अवस्था में समस्या-विवरण (sta-tement of problem) भी होता है। कभी साक्ष्यों के जमा होने के बाद समस्या विवरण होता है, कभी समस्या-विवरण पहले और उसके अनुरूप साक्ष्यों का संग्रह बाद में होता है और कभी थोड़े से साक्ष्यों से समस्या निश्चित हो जाती है और विशेष साक्ष्य बाद में जमा किये जाते हैं। सामान्यतः समस्या-समाधान इसी बात पर निर्भर करता है कि समस्या-विवरण किस ढंग से किया गया और साक्ष्यों को किस प्रकार एकत्र एवं व्यवस्थित किया गया। सर्जनात्मक ढंग से सोचनेवाला व्यक्ति बड़े कौशल से साक्ष्यों का गठन एवं पुनर्गठन करता है और समस्या का विवरण एवं पुनर्विवरण करता है। समस्या-विवरण में व्यक्ति की भाषा बड़ी सहायता देती है।

उद्भवन (incubation)—रचनात्मक चिन्तन की यह दूसरी अवस्था होती हैं। किसी-किसी समस्या का समाधान तो उचित ढंग से समस्या-विवरण होते ही हो जाता है, जैसे कि समस्या ने स्वयं अपना समाधान ढूँढ लिया। परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। प्रायः व्यक्ति को समस्या का समाधान नहीं सूझता है और वह एक प्रकार की निष्क्रियतावस्था (period of inactivity) में चला जाता है जिसे उद्भवन की अवस्था कहते हैं। वह समाधान का सक्रिय प्रयास छोड़ देता है। दूसरे शब्दों में, वह समस्या को सक्रिय चेतना से हटाकर अपने अवचेतन मन में डाल देता है और स्वयं दूसरी क्रियाओं में लग जाता है। धीरे-धीरे समाधान को अवरुद्ध करनेवाले विचार हटने लगते हैं और समाधान दर्शानेवाले विचार आने लगते हैं। इस अवधि के अनुभव और अधिगम भी समाधान में सहायक होते हैं। एक ऐसी भी

अवस्था आती है जब अचानक समाधान प्रकट हो जाता है और उद्भवन की अवस्था समाप्त हो जाती है। पृष्ठ १२४ पर फेकनर (Fechner) के सम्बन्ध में लिखा गया है कि वर्षों वे इस खोज में रहे कि शरीर और मन अथवा उद्दीपन और अनुभव के बीच के संबन्ध का गणितीय विवरण कैसे दिया जाय। यह समस्या उद्भवन की अवस्था में पड़ी रही और २२ अक्तूबर, १८५० को अचानक समाधान मिल गया। उद्भवन-अवस्था में अचेतन मन क्रियाशील रहता है।

प्रबोधन (illumination)—उद्भवन की अवस्था कुछ मिनटों की हो या वर्षों की, जब प्रबोधन प्राप्त होता है तो समाप्त हो जाती है। प्रबोधन वस्तुतः समाधान का अचानक प्रकट होना है, जैसे—बटन दबाते ही अन्धकार में रोशनी फैल जाती है। प्रबोधन की मूल बात यह है कि यह अचानक प्रकट होता है जिसे 'आ-हा' अनुभव भी कहा गया है। अधिगम के अन्तर्दृष्ट्यात्मक सिद्धान्त के वर्णन में इसका वर्णन हो चुका है। यह आवश्यक नहीं है कि सर्जनात्मक चिन्तन के प्रबोधन में जो समाधान दृष्टिगत हो वह ठीक ही हो, परन्तु उस क्षण ऐसा लगता है कि समाधान मिल गया।

सत्यापन (verification)—प्रबोधन से प्राप्त समाधान का शुद्ध होना आवश्यक नहीं है। यह सामान्य अनुभव है कि 'आ-हा' अनुभव के बाद उसका दोष प्रकट होता है और व्यक्ति पुनः उदासीन हो जाता है। अतः सर्जनात्मक चिन्तन की अन्तिम अवस्था यह है कि प्रबोधन द्वारा प्राप्त समाधान की जाँच की जाय कि वह ठीक है या नहीं और सभी परिस्थितियों में वह समाधान सफल रहता है अथवा नहीं। यदि जाँच में समाधान सत्यापित नहीं हो सका तो 'आ-हा' अनुभव के बाद भी समस्या वर्तमान रहती है और व्यक्ति उद्भवन की ही अवस्था में रहता है।

सर्जनात्मक चिन्तन के प्रकार (Types) :

सर्जनात्मक चिन्तन की प्रक्रिया (process) और परिणाम (results), दोनों पर ध्यान देना आवश्यक है क्योंकि बहुत-से परिणाम ऐसे हैं जो बाह्य स्वरूप में सर्जनात्मक मालूम होते हैं परन्तु वास्तव में वे सर्जनात्मक चिन्तन के परिणाम नहीं हैं। बहुत-से पागल नये-नये ढंग के शब्द निर्मित करते हैं और विचित्र वाक्यों का प्रयोग करते हैं, परन्तु इनसे पागलपन झलकता है, सर्जनात्मकता नहीं। लेखक के एक मित्र धरती को चौरस और चौकोर सिद्ध करने के यंत्र बना रहे हैं। उनके अनुसार, न्युटन का गुरुत्वाकर्षण गलत है और ढाल (slope) ही एकमात्र बल है। ये बातें नयी हैं परन्तु सर्जनात्मक नहीं हैं, यद्यपि अपने विचारों के पक्ष में वे अनेक तर्क भी देते हैं। मित्र लोग उनके मानसिक संतुलन पर संदेह करते हैं। चिन्तन के फलों का मूल्यांकन समाज करता है कि वस्तुतः वह सर्जनात्मक है या कुछ और। ऐसे भी चिन्तक हैं जिनके विचार आज के लिए पागलपन हैं और ५० वर्ष बाद किसी बड़े आविष्कार का आधार बन जाते हैं। एक ही विचार समाज के एक वर्ग के लिए रचनात्मक माना जाता है और दूसरे वर्ग के लिए विकृति का सूचक। सर्जनात्मक चिन्तन को ठीक-ठीक पहचानने के लिए उसकी प्रक्रिया पर ध्यान देना अधिक लाभप्रद है।

तार्किक चिन्तन में निष्कर्ष पूर्णतः आधार-वाक्यों पर निर्भर करता है और उसमें कोई नवीनता नहीं लायी जा सकती है। प्रत्येक न्यायवाक्य का निष्कर्ष एक और

निश्चित होता है। **गिल्फोर्ड** (Guilford, 1967) ने सर्जनात्मक चिन्तन के दो रूप माने हैं—**अभिसारी** चिन्तन (convergent thinking) एवं **अपसारी** चिन्तन (divergent thinking)। अभिसारी चिन्तन में, **गिल्फोर्ड** के अनुसार, किसी समस्या का शुद्ध उत्तर ढूँढा जाता है और अपसारी चिन्तन में विविध प्रकार के उत्तर उत्पन्न किये जाते हैं। अभिसारी चिन्तन प्रधानतः व्यक्ति की तार्किक योग्यता (logical ability) और घटनाओं को साफ-साफ विभिन्न वर्गों में बाँटने की योग्यता पर निर्भर करता है। इसके विपरीत, अपसारी चिन्तन प्रवाह (fluency), नम्यता (flexibility) और मौलिकता (originality) से निर्धारित होता है। प्रवाह से तात्पर्य है कि व्यक्ति कितनी आसानी से और कितनी संख्या में विचार (ideas) उत्पन्न कर सकता हैं, नम्यता से तात्पर्य है कि व्यक्ति कितनी आसानी से एक मनःतंत्र (frame of reference) को बदलकर दूसरा मनःतंत्र उत्पन्न कर सकता है और मौलिकता का अर्थ है कि व्यक्ति के शब्द, विचार, दृष्टिकोण आदि में नयापन कितना है। जिस व्यक्ति में प्रवाह, नम्यता और मौलिकता अधिक है उसमें अपसारी चिन्तन अधिक माना जायगा।

गिल्फोर्ड का विचार है कि सर्जनात्मक चिन्तन अपने स्वरूप में मूलतः अपसारी चिन्तन ही है। सर्जनात्मक चिन्तक नये और मौलिक संबन्ध देखता है चाहे उनमें तर्क का अभाव ही क्यों न हो, पुराने विचारों में नये अर्थों का आविष्कार करता है और वह असम्बद्ध विचारों एवं घटनाओं को भी नये दृष्टिकोण और नये मनःतंत्र में घेरकर सम्बद्ध दिखाता है। इससे स्पष्ट है कि पुराने घिसे-पिटे रास्तों पर चलने से, पुरानी परिभाषाओं को ढोने से और वस्तुओं एवं घटनाओं में नयी दिशाएँ एवं पक्ष नहीं ढूँढने और देखने से सर्जनात्मक चिन्तन अवरुद्ध होता है। वस्तुतः अपसारी चिन्तन में अभिसारी चिन्तन (convergent thinking) और आत्मचिन्तन (autistic thinking) दोनों की सहायता ली जाती है। अभिसारी चिन्तन द्वारा व्यक्ति बहुत सारे विचार एवं सूचनाएँ एकत्र कर आत्मचिन्तन में डूब जाता है और इस स्वतंत्र चिन्तन के फलस्वरूप ऐसे उपयोगी विचार आने लगते हैं जो समस्या से बँधे रहने पर कभी नहीं आते।

मनोविज्ञानियों ने इस बात की खोज की है कि अपसारी चिन्तन (divergent thinking) का आधार क्या है। **फ्रायड** पर विश्वास रखनेवाले बहुत-से मनोविश्लेषकों (psychoanalysts) का विचार है कि अपसारी चिन्तन से व्यक्ति के अवियोजित मनोद्वन्द्व (unresolved mental conflict) और अमान्य संवेगों की कार्यवाहियों का परिचय मिलता है। व्यक्ति अपने अन्दर के इन विचारों एवं भावनाओं से अनभिज्ञ रहता है, अन्यथा उसमें अपराध की भावना होंने लगेगी। **कूबी** (Kubie, 1958), **टौरेंस** (Torrance, 1962) आदि के अनुसार, सर्जनात्मक चिन्तक वह है जो अपने अचेतन मन के विषयों तक सहज ढंग से पहुँचने की योग्यता रखता है। तर्क और परम्परा से चिपटे रहने से व्यक्ति की यह योग्यता घट जाती है। मनोविश्लेषणात्मक विचारकों के समान ही **मेडनिक** (Mednic, 1962) का विचार है कि सर्जनात्मक व्यक्तियों के पास किसी उद्दीपन के प्रति बहुत सारी साहचर्यात्मक अनुक्रियाएँ रहती हैं जिनमें से अधिकांश पर तो सामान्य लोगों का ध्यान भी नहीं जाता है। मेडनिक ने सर्जनात्मकता मापने के लिए एक दूरवर्त्ती साहचर्य-जाँच (remote association test, RAT) बनायी जिसके द्वारा लोगों के साहचर्यो

के फैलाव एवं मौलिकता की जाँच की जाती है। अध्ययनों से पता चला है कि जिन लोगों को RAT पर ऊँचे अंक मिलते हैं वे सर्जनात्मकता में भी ऊँचे रहते हैं।

सर्जनात्मक व्यक्तियों के व्यक्तित्व की विशेषताएँ भी निर्धारित की गयी हैं। **बैरन** (Barron, 1965) के अनुसार, ये लोग आत्मकेन्द्रित (self-centered), तुनुकमिजाज और जिद्दी होते हैं। ये टेढ़े-मेढ़े चित्रों एवं अव्यवस्था को दूसरों की तुलना में अधिक बर्दाश्त करते हैं। **वैलैश** (Wallach, 1971) के अनुसार, सर्जनात्मक व्यक्तियों का अधिक बुद्धिमान होना आवश्यक नहीं है। कई अध्ययनों के अनुसार यदि बुद्धि लब्धि १२० से अधिक हुई तो सर्जनात्मकता को कोई लाभ नहीं होता है। इतना अवश्य है कि बुद्धि की एक न्यूनतम मात्रा सर्जनात्मकता के लिए आवश्यक है। बुद्धि और व्यक्तित्व के प्रसंग में सर्जनात्मक व्यक्तियों के लक्षणों का सविस्तर वर्णन आगे होगा।